



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 198]

No. 198]

नई दिल्ली, शुक्रवार, जुलाई 20, 2007/आषाढ़ 29, 1929
NEW DELHI, FRIDAY, JULY 20, 2007/ASADHA 29, 1929

बाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(बाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिवेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 20 जुलाई, 2007

अतिम जांच परिणाम

विषय : चीन जन. गण. और जापान से पेरोक्सोसल्फेट्स (जिसे पी सल्फेट्स के नाम से भी जाना जाता है) के आयात से संबंधित पाटनरोधी जांच।

फा. सं. 14/1/2006-डीजीएडी.—वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतद्पश्चात् अधिनियम कहा गया है) और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति के निर्धारण के लिए) नियमावली, 1995 (जिसे एतद्पश्चात् नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए :

1. यतः मै. गुजरात परसाल्ट्स प्रा.लि. अहमदाबाद, मै. केलिबर केमिकल्स प्रा.लि., मुंबई और मै. योयो केमिकल्स, अहमदाबाद (जिन्हें एतद्पश्चात् अब्देक कहा गया है) ने अधिनियम और नियमावली के अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष संयुक्त रूप से एक याचिका दायर की है जिसमें चीन जन.गण. और जापान (जिन्हें एतद्पश्चात् संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित पेरोक्सोसल्फेट्स जिसे परसल्फेट्स के नाम से भी जाना जाता है (जिसे एतद्पश्चात् संबद्ध वस्तु भी कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाया गया है और संबद्ध वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के लिए जांच की शुरूआत करने का अनुरोध किया गया है।

2. और यतः प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की ओर से आवेदकों द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्यों के आधार पर भारत के राजपत्र, असाधारण में दिनांक 28 जुलाई, 2006 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की है जिसमें नियमावली के उपनियम 5(5) के अनुसार संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के आयात से संबंधित पाटनरोधी जांच की शुरूआत की गई है जिससे कथित पाटन की मौजूदगी,

उसकी मात्रा और प्रभाव का निर्धारण किया जा सके और ऐसे पाटनरोधी शुल्क की राशि की सिफारिश की जा सके जिसे यदि लगाया जाता है तो वह घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी ।

क. प्रक्रिया

3. प्राधिकारी द्वारा प्रारंभिक जांच परिणामों की अधिसूचना के पश्चात् की जांच के संबंध में निम्नलिखित प्रक्रिया का पालन किया गया है :-

- (i) प्राधिकारी ने अपने पास उपलब्ध सूचना के अनुसार दिनांक 26 फरवरी, 2007 को भारत स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों, संबद्ध देशों से ज्ञात नियातिकों, ज्ञात आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों तथा घरेलू उद्योग को प्रारंभिक जांच परिणाम की प्रतियां भेजी थीं । इस जांच के पक्षकारों को प्रारंभिक जांच परिणामों की अधिसूचना के 40 दिनों के भीतर अपने विचारों से लिखित रूप में अवगत कराने के लिए कहा था ।
- (ii) प्रारंभिक जांच परिणामों के उत्तर में हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियों को रिकॉर्ड में रखा गया था और प्राधिकारी ने इस प्रकटन विवरण में उनमें उठाए गए मुद्दों की जांच की है ।
- (iii) प्राधिकारी ने एक सार्वजनिक फाइल के रूप में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्ष्यों के अगोपनीय अंश को उपलब्ध रखा था और इसे हितबद्ध पक्षकरों द्वारा निरीक्षण के लिए खुला रखा था ।
- (iv) भारत में संबद्ध वस्तुओं की इष्टतम उत्पादन लागत और इसके निर्माण और बिक्री की लागत की गणना सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों के आधार पर याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत सूचना के अधार पर की गई थी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा ।
- (v) प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों को उनके विचार प्रस्तुत करने का अवसर उपलब्ध कराने के लिए दिनांक 9.4.2007 को एक सार्वजनिक सुनवाई का आयोजन किया था । सार्वजनिक सुनवाई के दौरान पक्षकारों

द्वारा किए गए मौखिक अनुरोधों को इस जांच के प्रयोजनार्थ लिखित रूप में रिकॉर्ड में रखा गया था ।

- (vi) विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा द्वारा उनके द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के संबंध में किए गए गोपनीयता के दावे की जांच की गई थी । वह सूचना जो अपनी प्रकृति के कारण गोपनीय थी या हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर उपलब्ध कराई गई थी तथा जिसके साथ उसका अगोपनीय सारांश दिया गया था, को इस जांच परिणाम में गोपनीय माना गया है । इस जांच परिणाम में *** चिन्ह घरेलू उद्योग द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना को प्रदर्शित करता है और प्राधिकारी ने नियमों के अंतर्गत इसे गोपनीय माना है ।
- (vii) मामले के आवश्यक तथ्यों को सभी हितबद्ध पक्षकारों को दिनांक 5 जुलाई, 2007 को गोपनीय और सामान्य प्रकटन के रूप में प्रकट किया गया था । प्रकटन विवरण के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियों पर उनकी संगतता तथा साक्ष्यों द्वारा समर्थित होने की सीमा तक प्राधिकारी द्वारा विचार किया गया था ।
- (viii) यह जांच 1.1.2005 से 31.12.2005 (पीओआई) की अवधि के दौरान की गई थी ।
- (ix) संक्षिप्तता बनाए रखने के लिए प्रारंभिक जांच परिणामों से पहले हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियों और उनके द्वारा उठाए गए मुद्दों को इन जांच परिणामों में दोहराया नहीं गया है ।

ग. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

4. इस जांच में विचाराधीन उत्पादन पेरोक्सोसल्फेट्स (जिसे परसल्फेट्स के नाम से भी जाना जाता है) है । वर्तमान जांच में तीन प्रकार के परसल्फेट्स को शामिल किया गया है जो इस प्रकार हैं:-

- (i) अमोनियम परसल्फेट्स (एपीएस), (एनएच4)2एस2ओ8)
- (ii) पोटेशियम परसल्फेट्स (पीपीएस),(के2एस2ओ8); और
- (iii) सोडियम परसल्फेट्स (एसपीएस)(एनए2एस2ओ8)

5. ये परसल्फेट्स अल्कली मैटल्स सॉल्ट के रूप में उत्पादित घनिष्ठ रूप से संबंधित योगिकों का एक समूह है। ये सर्वाधिक संवेदनशील और सक्षम ऑक्सीकरण एजेंट्स हैं और अत्यधिक दक्षता और सरलता के साथ सक्रिय ऑक्सीजन का निस्सारण करते हैं। सभी तीन परसल्फेट्स का विनिर्माण इलैक्ट्रोकेमिकल रूप से किया जाता है तथा इनके वस्त्र एवं रसायन उद्योग में उत्प्रेरक और ऑक्सीकरण एजेंट के रूप में समान या प्रतिस्थापनीय अंतिम प्रयोग हैं। सभी परसल्फेट्स को भारतीय व्यापार वर्गीकरण के अंतर्गत उप शीर्ष 283340 और उप शीर्ष 28334000 के अंतर्गत सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 28 (सुमेलीकृत वस्तु विवरण और कोडिंग प्रणाली पर आधारित) में वर्गीकृत किया जाता है। तथापि, उपर्युक्त वर्गीकरण मात्र सांकेतिक है और इससे इस जांच का कार्य क्षेत्र किसी भी तरह से बाधित नहीं होता है।

6. घरेलू उद्योग के इन तर्कों के आधार पर कि परसल्फेट्स के उपर्युक्त प्रकारों को विचाराधीन उत्पाद के दायरे के भीतर शामिल किया जाना चाहिए क्योंकि परसल्फेट्स की विनिर्माण प्रक्रियां, कार्य और प्रयोग समान हैं और इन उत्पादों में पर्याप्त तकनीकी और वाणिज्यिक प्रतिस्थापनीयता विद्यमान है, प्राधिकारी ने अपने जांच परिणामों में यह माना था कि 3 प्रकार के परसल्फेट्स को समान और इस मामले में विचाराधीन उत्पाद की परिभाषा के प्रयोजनार्थ एक उत्पाद माना जाना अपेक्षित है। विचाराधीन उत्पाद या समान वस्तु के कार्यक्षेत्र के संबंध में किसी हितबद्ध पक्षकार से कोई तर्क प्राप्त नहीं हुआ है। इसलिए प्राधिकारी विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के संबंध में अपने प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि करते हैं।

घ. घरेलू उद्योग और उसकी स्थिति

7. यह आवेदन मैसर्स गुजरात परसॉल्ट्स प्रा.लि., अहमदाबाद, मैसर्स केलिबर केमिकल्स प्रा.लि, मुंबई और मै. योयो केमिकल्स, अहमदाबाद द्वारा प्रस्तुत किया गया है और आवेदकों का भारत में संबद्ध वस्तु के घरेलू उत्पादन में समग्र रूप से 50% से अधिक हिस्सा बनता है। घरेलू उद्योग ने आवेदकों द्वारा संबद्ध वस्तुओं के आयातों के संबंध में सूचना संबंधी कतिपय त्रुटियों पर ध्यान दिलाया है और प्राधिकारी नोट करते हैं कि मैसर्स योयो केमिकल्स ने जांच अवधि के दौरान 20 मी.टन सोडियम सल्फेड का आयात किया है। गुजरात परसॉल्ट्स प्रा.लि. ने जांच अवधि के दौरान 21 मी.टन अमोनियम परसल्फेट्स और 21 मी.टन सोडियम

परसल्फेट्स का आयात किया है। घरेलू उद्योग के आवेदकों का यह आयात उनके स्वयं के उत्पादन का लगभग 10% है और इन आयातों के कुछ हिस्से का प्रयोग आगे उत्पादन के लिए किया गया है जबकि एक हिस्से को घरेलू बाजार में बेचा गया है। आवेदकों ने तर्क दिया है कि ये आयात उस समय किए गए थे जब उद्योग को सस्ते चीनी आयातों का सामना करना पड़ रहा था ताकि इतने कम कीमत वाले आयातों के कारणों की जांच की जा सके। इसके अलावा, यह भी तर्क दिया गया है कि यदि इन दोनों उत्पादकों को घरेलू उद्योग का हिस्सा नहीं भी माना जाता है तो भी जांच अधिक के दौरान लगभग 1400 मी.टन संबद्ध वस्तु का उत्पादन करने वाले भी, केलिबर केमिकल्स का भारत में संबद्ध वस्तु के कुल उत्पादन में 50% से अधिक हिस्सा है और इसलिए उनके पास इस आवेदन को दायर करने संबंध योग्यता है और नियमों के अंतर्गत वे घरेलू उद्योग हैं।

8. प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियम 2(ख) उन घरेलू उत्पादकों को सम्मिलित करने को प्रतिबंधित नहीं करता है जिन्हें घरेलू उद्योग का हिस्सा समझा गया है और जिन्होंने संबद्ध वस्तु का आयात किया था। इस वर्तमान मामले में 2 आवेदक घरेलू उत्पादकों ने संबद्ध वस्तु का आयात किया है परंतु जांच अधिक के दौरान संबद्ध वस्तु के उनके कुल उत्पादन में इस आयात का हिस्सा 10% से कम है। इसके अलावा ये आयात स्पष्ट रूप से ऐसी कम कीमतों पर निर्यातों के संभव कारणों को सुनिश्चित करने के लिए सस्ते आयातों के विरुद्ध अपनी सुरक्षा के लिए किए गए थे। इस तथ्य के मद्देनजर कि घरेलू उद्योग के क्षति संबंधी मूल्यांकन में जहां तक संभव हो घरेलू उद्योग के आंकड़ों पर विचार करना चाहिए, प्राधिकारी का यह विचार है कि इन उत्पादकों को क्षति निर्धारण हेतु घरेलू उद्योग का हिस्सा माना जाना चाहिए। किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने घरेलू उद्योग के दावे या इस संबंध में प्राधिकारी द्वारा किए गए अनंतिम निर्धारण पर कोई विवाद नहीं उठाया है। अतः प्राधिकारी यह मानते हैं कि आवेदन घरेलू उद्योग का निर्माण करते हैं और नियमों के अर्थों के भीतर इस जांच के प्रयोजनार्थ आवेदन दायर करने संबंधी योग्यता रखते हैं।

ड न्यूनतम आयात मात्राएं

9. प्राधिकारी द्वारा वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) और अन्य गौण स्रोतों से प्राप्त आयात संबंधी आंकड़ों के अनुसार संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयात निर्धारित न्यूनतम स्तर से अधिक हैं।

च. अन्य अनुरोध एवं उठाए गए मुद्दे

10. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के किसी भी उत्पादक और उपभोक्ता या भारत में आयातक ने निर्दिष्ट प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया है और न ही किसी पक्षकार ने वर्तमान जांच से संगत सूचना प्रस्तुत की है। घरेलू उद्योग ने प्राधिकारी के प्रारंभिक जांच परिणामों पर की गई अपनी टिप्पणियों में क्षति मार्जिन के निर्धारण की पद्धति और तुलना की पद्धति पर अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत की थीं। इन टिप्पणियों को प्राधिकारी द्वारा नोट किया गया है और इन जांच परिणामों के संगत खंडों पर इन पर विचार किया गया है।

छ. पाटन मार्जिन का निर्धारण

11. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) में यह व्यवस्था है कि यदि कोई पक्षकार सूचना देने से मना करता है या अन्यथा तर्कसंगत अवधि के भीतर आवश्यक सूचना उपलब्ध नहीं कराता है या जांच में महत्वपूर्ण रूप से बाधा डालता है तो प्राधिकारी उपलब्ध तथ्यों के आधार पर अपने जांच परिणाम दर्ज कर सकते हैं।

12. अनुबंध-II के पैराग्राफ 1 के साथ पठित करार के अनुच्छे 6.8 में यह व्यवस्था है कि जांच की शुरूआत के बाद जितनी जल्दी संभव हो जांचकर्ता प्राधिकारियों को किसी हितबद्ध पक्षकार से अपेक्षित सूचना के ब्यौरों तथा हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अपने उत्तरों में सूचना को किस ढंग से दिया जाना है, को विनिर्दिष्ट करना चाहिए। प्राधिकारी को यह भी सुनिचित करना चाहिए कि पक्षकारों को यह भी संज्ञान होना चाहिए कि यदि एक तर्कसंगत अवधि के भीतर सूचना प्रस्तुत नहीं की जाती है तो प्राधिकारी घरेलू उद्योग द्वारा जांच की शुरूआत हेतु आवेदन में दिए गए तथ्यों समेत उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारण करने के लिए स्वतंत्र होंगे।

13. प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यातकों और संबद्ध देशों की सरकारों को निर्धारित ढंग और पद्धति से सूचना प्रस्तुत करने की ज़रूरत के बारे में पर्याप्त रूप से अधिसूचित किया गया है और पक्षकारों को इस संबंध में अपने अनुरोध करने के लिए पर्याप्त अवसर दिया गया था। अतः संबद्ध देश से सहयोग के अभाव में प्राधिकारी ने संबद्ध देश के संबंध में पाटन मार्जिन का निर्धारण उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किया है।

क. चीन जन.गण.

सामान्य मूल्य

14. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन जन.गण. से किसी भी निर्यातिक/उत्पादक ने निर्धारित प्रश्नावली के अनुसार सामान्य मूल्य के संबंध में कोई उत्तर या सूचना प्रस्तुत नहीं की है और न ही उन्होंने चीनी निर्यातिकों के विरुद्ध गैर-बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी मान्यता का खंडन किया, है । प्रारंभिक जांच परिणामों में प्राधिकारी ने नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के आधार पर चीन में सामान्य मूल्य का निर्धारण किया था । प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद भी किसी भी चीनी उत्पादक ने प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया है ।

15. याचिकाकर्ताओं ने अमरीका को उपर्युक्त मानक देश के रूप में अभिज्ञात किया था और अमरीका में विचाराधीन उत्पाद के एक उत्पादक मै. एफएमसी केमिकल कारपोरेशन, यूएसए को नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के अनुसार संबद्ध वस्तु के सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु प्रतिनिधि के रूप में कार्य करने के लिए सहमति किया है । प्राधिकारी की जानकारी में यह भी लाया गया था कि विश्व में संबद्ध वस्तु के काफी कम उत्पादक हैं और मै. एफ एम सी कारपोरेशन, यूएसए संबद्ध वस्तु के अग्रणी उत्पादकों में से एक हैं जिन्होंने जांच में सहयोग करने के लिए सहमति प्रकट की है । तदनुसार प्राधिकारी ने मै. एफ एम सी केमिकल कारपोरेशन, यूएसए से उन्हें उपर्युक्त प्रयोजनार्थ उक्त नियमों के अनुसार प्रतिनिधि देश के रूप में अधिसूचित करने से पहले संगत सूचना प्रदान करने का अनुरोध किया था । मै. एफएमसी कारपोरेशन ने नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के प्रथम परंतुक के अनुसार सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु अपनी लागत और घरेलू बिक्री संबंधी सूचना उपलब्ध कराई है । तदनुसार प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियमावली के अनुसार प्रतिनिधि देश को चुनने के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों को सूचित किया है तथापि, इस मुद्दे पर किसी हितबद्ध पक्षकार से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है ।

16. अमरीका में प्रतिनिधि उत्पादक ने संगत सूचना उपलब्ध कराई है । प्रतिनिधि उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत सूचना में कतिपय खामियां पाई गई हैं । प्राधिकारी को प्रतिनिधि उत्पादक की लागत और कीमतों तथा सभी 3 उत्पाद किस्मों के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा दावा किए गए परिकलित सामान्य मूल्य के बीच काफी अंतर का पता चला है । इन खामियों के बारे में प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद एफएमसी को बताया गया था और प्रतिनिधि उत्पादक ने आगे और सूचना और स्पष्टीकरण

प्रस्तुत किया है। तथापि, इस सूचना में कतिपय उत्पाद किस्मों के लिए काफी अधिक कीमतें प्रदर्शित किया जाना जारी है और इससे जांचाधीन देश की तुलना में लागत और कीमत संरचना में भारी अंतर का संकेत मिलता है। प्राधिकारी पाते हैं कि सामान्य मूल्य के निर्धारणार्थ एफएमसी कॉरपोरेशन द्वारा प्रस्तुत सूचना को स्वीकार करना चीनी उत्पादकों के लिए अधिक प्रतिकूल होगा। घरेलू उद्योग ने प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद के अपने अनुरोधों में यह तर्क दिया है कि केवल इस बात के कारण कि घरेलू उद्योग काफी कम उत्पादन लागत के साथ अधिक सक्षम उत्पादक है, प्राधिकारी को प्रतिनिधि उत्पादक के आंकड़ों को अस्वीकार नहीं करना चाहिए और घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत के आधार पर सामान्य मूल्य का परिकलन नहीं करना चाहिए। प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रतिनिधि उत्पादक द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों पर उपर्युक्त कारणों की वजह से पूर्ण रूप से विश्वास नहीं किया जा सकता और इसलिए इन्हें इस बात पर विचार नहीं करते हुए कि इनसे उच्च या निम्न सामान्य मूल्य का निर्धारण होता है, चीन में सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु स्वीकार करना उचित होगा।

17. अपनी याचिका में घरेलू उद्योग ने लाभ मार्जिन हेतु तर्कसंगत योग के बाद भारत में संबद्ध वस्तुओं की उत्पादन लागत के आधार पर चीन में सामान्य मूल्य का दावा किया था। प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि कच्ची सामग्रियों की अंतर्राष्ट्रीय कीमत तथा *** % के तर्कसंगत लाभ मार्जिन के साथ समायोजित खपत मानकों को विधिवत ढंग से समायोजित करने के बाद भारत में उत्पादन लागत के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करना चीन जन.गण में सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु सर्वाधिक उचित आधार होगा। तदनुसार चीन से सभी निर्यातकों के लिए विचाराधीन उत्पाद का कारखान द्वार पर सामान्य मूल्य निम्नानुसार निर्धारित किया गया है:-

उत्पाद का प्रकार	परिकलित सामान्य मूल्य अम.डॉ./किग्रा.
अमोनियम परसल्फेट	*****
पोटैशियम परसल्फेट	*****
सोडियम परसल्फेट	*****

निर्यात कीमत

18. प्राधिकारी ने प्रारंभिक जांच परिणामों में यह नोट किया था कि चीन से किसी भी निर्यातक ने उस कीमत के संबंध में कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई थी जिस पर भारत को संबद्ध वस्तुओं का निर्यात किया गया था। प्राधिकारी द्वारा किए गए अनंतिम निर्धारण के बारे में सभी हितबद्ध पक्षकारों को भी बताया गया था तथापि, किसी भी चीनी उत्पादक ने प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद भी निर्दिष्ट प्राधिकारी का उत्तर नहीं दिया। इन परिस्थितियों में प्रत्येक निर्यातक के लिए अलग से निर्यात कीमत का निर्धारण करना संभव नहीं है।

19. डीडीसीआईएंड एस से भारत में संबद्ध वस्तुओं के आयात के सबध में व्यौरेवार सूचना उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया था जिसे प्राप्त किया गया और उसका विश्लेषण किया गया है। तदनुसार निर्यात कीमत का निर्धारण डीजीसीआईएंडएस द्वारा प्रदत्त सूचना के अनुसार सभी आयातों की भारित औसत निर्यात कीमत के आधार पर किया गया है। जांच में शामिल 3 किस्म के परसल्फेट्स के लिए अलग-अलग निर्यात कीमतें निर्धारित की गई हैं। कारखाना द्वार पर निवल निर्यात कीमत का निर्धारण उस देश से किसी सहयोगी निर्यातक से पूर्ण सूचना के अभाव में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर डीजीसीआईएस द्वारा बताए गए सीआईएफ मूल्य में अंतरदेशीय परिवहन, समुद्री भाड़ा और बीमा हेतु समायोजन करने के पश्चात किया गया है। तदनुसार कारखाना द्वार स्तर पर निवल निर्यात कीमत का निर्धारण निम्नानुसार किया गया है :-

उत्पाद का प्रकार	निवल निर्यात कीमत अम.डॉ./किग्रा.
अमोनियम परसल्फेट	*****
पोटेशियम परसल्फेट	*****
सोडियम परसल्फेट	*****

पाटन मार्जिन

20. उत्पाद किस्म स्तर पर पाटन मार्जिनों के निर्धारण के लिए अलग-अलग प्रकारों के कारखाना द्वार पर सामान्य मूल्य की तुलना अलग-अलग कारखाना द्वार स्तर पर निर्यात कीमतों के साथ की गई है और इसके बाद विचाराधीन उत्पाद के लिए भारित औसत पाटन मार्जिनों का निर्धारण निम्नानुसार किया गया है:

उत्पाद का प्रकार	आयात मात्रा किंग्रा. में	सामान्य मात्रा अम.डॉ./ किंग्रा.	निर्यात कीमत अम.डॉ./ किंग्रा.	पाटन मार्जिन अम.डॉ./ किंग्रा.	भारित औसत पाटन मार्जिन अम.डॉ./ किंग्रा.	पाटन मार्जिन %
अमोनियम परसल्फेट	160000	*****	*****	*****		
पोटेशियम परसल्फेट	29500	*****	*****	*****		
सोडियम परसल्फेट	140000	*****	*****	*****		
कुल	329500				*****	131%

(ख) जापान

सामान्य मूल्य

21. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जापान से किसी भी निर्यातिक/उत्पादक ने निर्धारित प्रश्नावली के अनुसार सामान्य मूल्य के संबंध में कोई उत्तर या सूचना प्रस्तुत नहीं की है। प्रारंभिक जांच परिणामों में प्राधिकारी ने बिक्री, सामान्य और प्रशासनिक खर्चों तथा तर्कसंगत लाभ समेत उत्पादन लागत के अनुमानों के आधार पर उपलब्ध तथ्यों पर आधारित सामान्य मूल्य का अनुमान लगाया था। प्रारंभिक जांच परिणाम सभी हितबद्ध पक्षकारों को अधिसूचित किए गए थे। तथापि, प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद भी जापानी उत्पादकों से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ था। ऐसी परिस्थिति में जापान के सभी निर्यातिकों के लिए संबद्ध वस्तुओं के कारखाना द्वारा सामान्य मूल्य का निर्धारण सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के अनुसार कच्चे माल की अंतराष्ट्रीय कीमत पर विचार करते हुए उत्पादन लागत के अनुमानों तथा समायोजित खपत मानदंडों एवं विनिर्माण व्ययों तथा उपलब्ध तथ्यों के अनुसार बिक्री, सामान्य तथा प्रशासनिक व्ययों के आधार पर किया गया है। जापान के लिए सामान्य मूल्य की गणना हेतु इस लागत में *** % का तर्कसंगत लाभ मार्जिन जोड़ा गया है और यह निम्नानुसार है:-

उत्पाद का प्रकार	परिकलित सामान्य मूल्य अम.डॉ./ किंग्रा.
अमोनियम परसल्फेट	*****
पोटेशियम परसल्फेट	*****
सोडियम परसल्फेट	*****

निर्यात कीमत :

22. जापान से किसी सहयोग के अभाव में प्राधिकारी ने अपने प्रारंभिक जांच परिणामों में निर्यात कीमत का निर्धारण डीजीसीआईएस द्वारा बताए गए जापान से आयातो के संबंध में सभी सौदों के भारित औसत आयात मूल्य के आधार पर किया था। सीआईएफ निर्यात कीमत होने के कारण इस प्रकार आंकलित निर्यात कीमत में कारखाना द्वार स्तर पर निर्यात कीमत की गणना हेतु उपलब्ध तथ्यों के आधार पर अंतरदेशीय परिवहन, समुद्री भाड़ा और बीमा हेतु समायोजन किए गए थे। उपर्युक्त निर्धारण के संबंध में किसी हितबद्ध पक्षकार से कोई टिप्पणी प्राप्त नहीं हुई है। अतः प्राधिकारी कारखाना द्वार स्तर पर निर्यात कीमत के अपने निर्धारण की पुष्टि निम्नानुसार करते हैं :-

उत्पाद का प्रकार	निवल निर्यात कीमत अम.डॉ./ किग्रा.
अमोनियम परसल्फेट	*****
पोटेशियम परसल्फेट	-
सोडियम परसल्फेट	*****

पाटन मार्जिन

23. पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु कारखाना द्वार स्तर पर सामान्य मूल्य की तुलना व्यापार के समान स्तर पर इस प्रकार निर्धारित सामान्य मूल्य के साथ की गई है जो निम्नानुसार ज्ञात की गई है :-

उत्पाद का प्रकार	आयोत मात्रा किग्रा. में	सामान्य मात्रा अम.डॉ./ किग्रा.	निर्यात कीमत अम.डॉ./ किग्रा.	पाटन मार्जिन अम.डॉ./ किग्रा.	भारित औसत पाटन मार्जिन अम.डॉ./ किग्रा.	पाटन मार्जिन %
अमोनियम परसल्फेट	*****	*****	*****	*****		
पोटेशियम परसल्फेट	-	*****	*****	*****		
सोडियम परसल्फेट	*****	*****	*****	*****		
कुल		*****	*****	*****	*****	141%

पाटन मार्जिन सारांश

उत्पाद का प्रकार	पाटन मार्जिन की राशि	पाटन मार्जिन %
चीन	*****	131%
जापान	*****	141%

24. संबद्ध देशों के संबंध में इस प्रकार निर्धारित पाटन मार्जिन काफी अधिक हैं और उपर्युक्त न्यूनतम स्तरों से अधिक हैं।

ज. क्षति संबंधी निर्धारण

25. प्राधिकारी नोट करते हैं कि किसी भी हितबद्ध पक्षकार द्वारा घरेलू उद्योग द्वारा किए गए क्षति संबंधी दावों या निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अधिसूचित प्रारंभिक जांच परिणामों के संबंध में कोई तर्क नहीं दिए गए हैं।

ज. 1 क्षति का संचयी आकलन

26. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II (3)में यह अपेक्षित है कि जब एक से अधिक देश से किसी उत्पाद का आयात एक साथ पाटनरोधी जांच के अधीन हो तो निर्दिष्ट प्राधिकारी ऐसे आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन करेंगे। यदि यह निर्धारित होता हो कि

- (i) अलग-अलग देशों से आयात न्यूनतम सीमा से अधिक है या संचयी रूप से आयातों के 7% से अधिक हैं।
- (ii) अलग-अलग देशों से पाटन मार्जिन 2% से अधिक हैं; और
- (iii) आयातित वस्तु और समान घरेलू वस्तुओं के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों के आलोक में आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन करना उचित है।

27. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटित आयात संबद्ध देशों समेत अनेक देशों से एक साथ भारतीय बाजारों में प्रवेश कर रहे हैं अतः इन स्रोतों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति के संचयी आकलन के मुद्दे की जांच उपर्युक्त मापदंडों के संबंध में की गई है और यह देखा गया है कि

- (i) प्रत्येक संबद्ध देश से अलग-अलग उत्पादों के पाटन का मार्जिन न्यूनतम सीमा से अधिक है ।
- (ii) प्रत्येक संबद्ध देश से अलग-अलग उत्पादों के आयात की मात्रा निर्धारित सीमाओं से अधिक है ।
- (iii) घरेलू उत्पाद और विभिन्न देशों में उत्पादकों द्वारा आपूर्ति उत्पाद समान वस्तु हैं ।
- (iv) आयातित उत्पाद और घरेलू रूप से उत्पादित संबद्ध वस्तु एक-दूसरे के स्थान पर प्रयोग की जा सकती हैं और एक दूसरे के स्थान पर इनका प्रयोग किया जा रहा है । विभिन्न देशों से आयातों संबंधी सौदावार सूचना से यहं पता चलता है कि ये आयात ऐसे व्यापारियों द्वारा भी किए जा रहे हैं जिन्होंने इस सामग्री की खरीद पुनः बिक्री के लिए की है । शामिल देशों द्वारा आपूर्ति की गई वस्तुएं भारतीय बाजार में वितरकों की समान श्रृंखला के जरिए प्रवेश कर रही हैं और समान बाजार में प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धा कर रही हैं ।
- (v) संबद्ध देशों से आपूर्ति किए गए उत्पादों का विपणन तुलनीय बिक्री श्रृंखलाओं के जरिए और समान वाणिज्यिक स्थितियों के अंतर्गत समान अवधि के दौरान भारत में किया जा रहा है ।

28. अतः प्राधिकारी मानते हैं कि इस मामले में क्षति का संचयी मूल्यांकन करना समुचित है क्योंकि संबद्ध देशों से अलग-अलग उत्पादों के निर्यात एक-दूसरे से प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धा करते हैं तथा भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा बेची जा रही समान वस्तुओं के साथ भी सीधी प्रतिस्पर्धा करते हैं ।

ज.2 क्षति एवं कारणात्मक संबंध की जांच

29. अनुबंध-II के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 में यह व्यवस्था है कि क्षति संबंधी निर्धारण में उन तथ्यों की जांच शामिल होगी जिनसे "... पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तु के घरेलू बाजार में कीमतों पर उनके प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव..." समेत सभी संगत तथ्यों पर विचार करते हुए, घरेलू उद्योग को हुई क्षति का संकेत मिलता हो, कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते हुए इस बात की जांच करना आवश्यक समझा गया है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान वस्तु की कीमतों की तुलना में भारी कीमत कटौती की गई है या क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों में महत्वपूर्ण स्तर तक कमी

करना है या ऐसी कीमत वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा महत्वपूर्ण स्तर तक बढ़ गई होती ।

30. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने हेतु आवेदन पैराग्राफ 1 में दिए गए 3 घरेलू उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत किया गया है और इन उत्पादकों का भारत में संबद्ध वस्तु के कुल उत्पादन में लगभग 94% हिस्सा है । प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि भारत में संबद्ध वस्तु का एक और उत्पादक अर्थात् मै. इलेक्ट्रोकेम इंडस्ट्रीज भी है, जिसका भारत में संबद्ध वस्तु के कुल उत्पादन में बहुत मामूली हिस्सा है । क्षति संबंधी निर्धारण और समग्र रूप से घरेलू उद्योग के लिए क्षति रहित कीमत के निर्धारण के प्रयोजनार्थ इस उत्पादक से उसकी लागत और क्षति संबंधी सूचना मांगी गई थी तथापि, इस उत्पादक ने कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि चूंकि संबद्ध वस्तुओं के कुल उत्पादन में इस उत्पादक का काफी कम हिस्सा बनता है, इसलिए क्षति और क्षति रहित कीमत के निर्धारण पर इसके आंकड़ों का कोई खास प्रभाव नहीं पड़ेगा । अतः क्षति निर्धारण हेतु आवेदक घरेलू उत्पादकों की लागत और क्षति संबंधी सूचना की जांच की गई है ।

31. भारत में घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभावों की जांच करने के लिए उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले संकेतकों जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, भंडार, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्तियां, पाटन के मार्जिन की मात्रा आदि पर नियमावली के अनुबंध-II के अनुसार विचार किया गया है ।

ज.1.1 पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव; आयात मात्राएं तथा घरेलू उद्योग पर प्रभाव:

32. संबद्ध देशों से पाटित अयातों तथा अन्य देशों से पाटित आयातों की मात्रा के प्रभाव की निम्नानुसार जांच की गई है :-

(क) आयात मात्राएं और इनमें संबद्ध देशों का हिस्सा

33. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी द्वारा इस बात पर विचार किया जाना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से या भारत में उत्पादन अथवा खपत की दृष्टि से भारी वृद्धि हुई है ।

34. संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों की मात्रा का विश्लेषण असंबद्ध उत्पादों के लिए आंकड़ों की कांट-छांट करने के बाद डीजीसीआईएंड एस आंकड़ों में बताए गए आंकड़ों पर आधारित है। आयात आंकड़े निम्नानुसार हैं :-

मात्रा: मी.टन में

देश	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
चीन जन.गण	120	213	204	330
प्रवृत्ति	100	178	170	275
जापान	0	55	36	72
प्रवृत्ति	0	100	66	132
संबद्ध देशों का कुल	120	268	240	402
प्रवृत्ति	100	223	200	335
अन्य देश	79	53	105	91
प्रवृत्ति	100	67	132	115
कुल आयात	199	321	345	493
प्रवृत्ति	100	161	173	248
संबद्ध देशों से हुए आयात का हिस्सा	60	83	70	82

आंकड़ों का स्रोत: डीजीसीआईएंडएस

35. उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के कुल आयातों और पाटित आयातों में क्षति जांच अवधि के दौरान लगभग 235% तक की भारी वृद्धि हुई है। कुल आयातों में संबद्ध देशों से पाटित आयातों का हिस्सा अधार वर्ष में 60% से बढ़कर जांच अवधि में कुल आयातों का लगभ 82% हो गया है।

(ख) घरेलू उत्पादन, क्षमताएं एवं क्षमता उपयोग:

36. घरेलू उत्पादन की मात्रा और घरेलू उद्योग के घरेलू प्रचालन पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच कुल उत्पादनों और क्षमता उपयोग की दृष्टि से की गई है।

मात्रा: मी.टन में

विवरण	2002-03	2003-04	2004-05	जन.05-दिस.05
स्थापित क्षमता	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	139	163	163
निगम/उत्पादन	*****	*****	*****	*****

प्रवृत्ति	100	103	107	121
क्षमता उपयोग	78.23	57.79	51.60	58.26
प्रवृत्ति	100	74	66	74

37. इस सूचना से यह पता चलता है कि आधार वर्ष की तुलना में घरेलू उद्योग की क्षमता में लगभग 63% की वृद्धि हुई है तथापि, उत्पादन में केवल 21% की वृद्धि हुई है जिसके परिणामस्वरूप क्षमता उपयोग में 58% की भारी गिरावट आई है जिससे भारी अपर्युक्त क्षमता का पता चलता है।

(ग) मांग एवं बाजार हिस्सा

38. आयात की मात्रा में वृद्धि का विश्लेषण मांग एवं बाजार हिस्से में वृद्धि के संबंध में किया गया है।

(क) बिक्रियां:

39. घरेलू बिक्रियों और बाजार हिस्सों पर पाटित आयातों के प्रभावों की निम्नानुसार जांच की गई है:-

मात्रा: मी.टन में

	2002-03	2003-04	2004-05	जन.05-दिस.05
घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्रियां	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	110	110	112
अन्य उत्पादक	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	119	110	110
कुल घरेलू बिक्रियां	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	111	110	112

40. उपर्युक्त सूचना से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग द्वारा संबद्ध वस्तु की बिक्री में आधार वर्ष की तुलना में लगभग 12% की वृद्धि हुई है तथापि, प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की मांग में आधार वर्ष की तुलना में लगभग 29% की वृद्धि हुई है।

(ख) मांग और बाजार हिस्सा

मात्रा:मी.टन में

	2002-03	2003-04	2004-05	जन.05-दिसं.05
घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्रियां	*****	*****	*****	*****
अन्य उत्पादकों द्वारा बिक्रियां	*****	*****	*****	*****
आयात				
चीन	120	213	204	330
जापान	0	55	36	72
अन्य	79	53	105	91
कुल आयात	199	321	345	493
मांग	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	117	118	129
बाजार हिस्सा				
घरेलू उद्योग	79.5%	74.5%	74.0%	68.8%
अन्य उत्पादन	7.7%	7.8%	7.1%	6.5%
चीन	7.7%	11.7%	11.1%	16.5%
जापान	0.0%	3.0%	2.0%	3.6%
पाटित आयात	7.7%	14.7%	13.1%	20.1%
अन्य देश	5.1%	2.9%	5.7%	4.5%

41. उपर्युक्त आंकड़ों से पता चलता है कि यद्यपि मांग में लगभग 29% की वृद्धि हुई है तथापि, घरेलू उद्योग की बिक्रियों में केवल 12% की वृद्धि हुई है और उनका बाजार हिस्सा आधार वर्ष में लगभग 80% से घटकर जांच अवधि के दौरान लगभग 69% रह गया है। संबद्ध देशों से पाटित आयातों का बाजार हिस्सा 2002-03 में लगभग 8% से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 20% हो गया है। कुल मांग में अन्य देशों के हिस्से में मामूली गिरावट आई है।

ज. 2.2 घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

42. जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का प्रश्न है, निर्दिष्ट प्राधिकारी से यह विचार करने की अपेक्षा की जाती है कि क्यों भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों के कारण उल्लेखनीय कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में उल्लेखनीय स्तर तक मंदी लाना अथवा कीमत वृद्धि को रोकना है, जो अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक होता। प्राधिकारी ने पाया है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के भारित औसत सीआईएफ आयात कीमतें निम्नानुसार रही हैं :-

सीआईएफ कीमत	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि सीआईएफ रु./किग्रा.
चीन जन.गण.	26.98	27.00	33.95	30.52
जापान		39.19	38.55	38.21
कुल-संबद्ध देश	26.98	29.50	34.64	31.91
अन्य देश	48.17	42.34	66.86	44.31
कुल	35.40	31.62	44.43	34.20

43. उपर्युक्त आंकड़े दर्शाते हैं कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं की सीआईएफ पहुंच कीमतों में पिछले कुछ वर्षों में वृद्धि की प्रवृत्ति के उपरांत पिछले वर्ष की तुलना में गिरावट आई है।

ज.2-3 कीमत कटौती एवं कम कीमत पर बिक्री

44. संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर हुए प्रभाव की जांच कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत अधिक्रमण और कीमत में मंदी, यदि कोई हो, के संदर्भ में की गई। बिक्री की लागत के विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग के सत्यापित आंकड़ों के आधार पर प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति (एनएसआर) तथा क्षति रहित कीमत (एनआईपी) का निर्धारण किया गया। घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति का निर्धारण करों तथा शुल्कों, छूटों, बट्टे तथा मालभाड़े और परिवहन को छोड़कर, बिक्री कीमत पर विचार करके किया गया। आयातों की पहुंच कीमत का निर्धारण 1% पहुंच प्रभार तथा लागू मूल सीमाशुल्क सहित सीआईएफ आयात कीमत के आधार पर किया गया है। घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित संबद्ध वस्तुओं के अलग-अलग उत्पाद प्रकारों की भारित औसत क्षति रहित कीमतों का निर्धारण रिलायंस से संबंधित मामलों में माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्णय के अनुसरण में घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत के आधार पर किया गया है।

45. घरेलू उद्योग ने प्रारंभिक जांच के उपरांत की गई टिप्पणियों में यह तर्क प्रस्तुत किया है कि कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री के प्रयोजनार्थ पहुंच मूल्य की गणना मूल सीमाशुल्क के साथ सभी स्थानीय करों एवं लेवियों को जोड़ने के बाद की जानी चाहिए और फिर इसकी तुलना घरेलू बिक्री कीमतों और सभी करों व लेवियों सहित क्षति रहित कीमत (एनआईपी) से की जानी चाहिए। बहरहाल, प्राधिकारी नोट करते हैं कि ऐसे निर्धारणों के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी द्वारा निरंतर अपनाई गई पद्धति के अनुसार घरेलू उद्योग की कारखाना द्वार कीमत की

तुलना आयातों की निकासी के पत्तन पर मूल सीमाशुल्क की अदायगी के बाद आयातों के पहुंच मूल्य से की जाती है। अतः इस पद्धति को बदलने में कोई गुणात्मकता नहीं है, जैसा कि घरेलू उद्योग ने सुझाव दिया है। जांच अवधि हेतु निर्धारित कीमत कटौती और परसल्फेटों के अलग-अलग प्रकारों की कम कीमत पर बिक्री के प्रभाव का व्यौरा निम्नानुसार है :-

रु./किग्रा.

जांच की अवधि	एपीएस	पीपीएस	एसपीएस
घरेलू बिक्री कीमत	*****	*****	*****
सीआईएफ कीमत			
चीन जन.गण.	25.10	30.87	36.64
जापान	38.13		51.26
कुल संबद्ध देश	25.17	30.87	37.15
पहुंच मूल्य			
चीन पीआर	29.36	36.12	42.87
जापान	44.61		59.97
कुल संबद्ध देश	29.45	36.12	43.46
कीमत कटौती			
चीन पीआर	*****	*****	*****
जापान	*****	*****	*****
कुल संबद्ध देश	*****	*****	*****
कीमत कटौती (%)			
चीन पीआर	35-45%	30-40%	45-55%
जापान	5-15%		25-35%
कुल संबद्ध देश	35-45%	30-40%	40-55%
क्षति रहित कीमत	*****	*****	*****
कम कीमत पर बिक्री			
चीन पीआर	*****	*****	*****
जापान	*****	*****	*****
कुल संबद्ध देश	*****	*****	*****
कम कीमत पर बिक्री (%)			
चीन पीआर	40-50%	30-40%	50-60%
जापान	10-20%		35-45%
कुल संबद्ध देश	40-50%	30-40%	50-60%

46. उपर्युक्त सूचना यह दर्शाती है कि जांच अवधि के दौरान उत्पाद के अलग-अलग प्रकारों के लिए और उनके भारित औसत स्तरों पर कीमत कटौती एवं कम कीमत पर बिक्री अत्यधिक थी।

ज.2.4 कीमत अधिक्रमण एवं मंदी

47. घरेलू कीमतों पर पाटित आयातों के कीमत अधिक्रमण एवं मंदी की जांच के लिए घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति की तुलना उत्पादन लागत से की गई है।

रु./किग्रा.

सभी परसल्फेट	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
भारित औसत घरेलू बिक्री कीमत	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	96	95	94
बिक्री की भारित औसत लागत	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	106	108	113
भारित औसत पहुंच मूल्य				
चीन जन.गण.	35.42	32.72	41.15	35.70
जापान	0	47.50	46.72	44.70
कुल-संबद्ध देश	35.42	35.75	41.98	37.33

48. उपर्युक्त आंकड़े दर्शाते हैं कि जहां क्षति की जांच अवधि में उत्पादन लागत में लगभग 13% वृद्धि हुई, वहीं बिक्री प्राप्ति में आधार वर्ष की तुलना में लगभग 6% गिरावट आई। जांच अवधि से पिछले वर्ष तक वृद्धि की प्रवृत्ति के बाद आयातों के पहुंच मूल्य में जांच अवधि के दौरान उल्लेखनीय गिरावट आई। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि आयातों का घरेलू कीमतों में मंदी पर उल्लेखनीय प्रभाव पड़ा है। ऐसा भी प्रतीत होता है कि अपना बाजार हिस्सा कायम रखने के लिए घरेलू उद्योग लागत में वृद्धि की भरपाई हेतु अपनी कीमतें नहीं बढ़ा पाया।

ज.3 क्षति के अन्य कारकों की जांच

49. पिछले खंड में क्षति के कुछ कारकों, उदाहरणार्थ बिक्री व बाजार हिस्से में वास्तविक एवं संभावित गिरावट; आयातों की मात्रा में वास्तविक एवं संभावित वृद्धि आदि की जांच के उपरांत प्राधिकारी द्वारा क्षति से संबंधित अनिवार्य मानदंडों की जांच निम्नानुसार की गई :-

(क) उत्पादकता पर वास्तविक एवं संभावित प्रभाव

50. घरेलू उद्योग की उत्पादकता की जांच प्रति दिवस एवं प्रति कर्मचारी उत्पादन के संदर्भ में की गई, जिसका ब्यौरा निम्नानुसार है :-

	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
कुल उत्पादन मी.टन में	*****	*****	*****	*****
प्रति दिवस उत्पादन मी.टन में	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	103	107	121
प्रति कर्मचारी उत्पादकता मी.टन में	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	89	92	102

51. घरेलू उद्योग की दैनिक उत्पादकता में सुधार हुआ है, हालांकि प्रति कर्मचारी उत्पादकता तकरीबन आधार वर्ष जितनी ही रही है।

(ख) लाभ पर वास्तविक एवं संभावित प्रभाव

52. संपूर्ण घरेलू उद्योग की संबद्ध वस्तुओं की लागत एवं कीमतों से संबंधित आंकड़ों के आधार पर इस उद्योग की लाभप्रदता की गणना की गई है, जिसका ब्यौरा निम्नानुसार है:-

लाभप्रदता	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
घरेलू उद्योग की भारित औसत निवल बिक्री प्राप्ति	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	96	95	94
घरेलू उद्योग की बिक्री की भारित औसत लागत	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	106	108	113
प्रति किंवा. लाभ/हानि	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	42	23	-14

53. उपर्युक्त आंकड़े दर्शाते हैं कि यद्यपि उत्पादन एवं बिक्री में समग्रतः वृद्धि हुई है, तथापि उत्पादन लागत में बढ़ोत्तरी हुई है और बिक्री कीमतों में कमी आई है। इस प्रकार आधार वर्ष में प्रति इकाई सकारात्मक लाभ मार्जिन जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को घरेलू बिक्री पर निवल घाटा हुआ है।

(ग) नकद लाभ तथा नकद प्रवाह पर वास्तविक तथा संभावित प्रभाव

54. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का नकद प्रवाह और नकद लाभ निम्नानुसार था :-

लाख रुपए

	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
नकद लाभ	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	59	42	4
नकद प्रवाह	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	-10	6	-64

55. घरेलू उद्योग के आंकड़े दर्शाते हैं कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के नकद प्रवाह और नकद लाभ की स्थिति में अत्यधिक गिरावट आई है।

(घ) रोजगार एवं मजदूरी

56. कर्मचारियों की संख्या तथा उन्हें भुगतान की गई मजदूरी से ज्ञात होता है कि उत्पादन में वृद्धि एवं क्षमता वर्धन के कारण रोजगार में वृद्धि हुई है। आधार वर्ष की तुलना में मजदूरी में भी वृद्धि हुई है, जो घरेलू उद्योग पर मजदूरी के बोझ में कोई व्युत्क्रमानुपाती वृद्धि नहीं दर्शाता।

	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
घरेलू उद्योग के कर्मचारियों की संख्या	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	115	116	119
मजदूरी (रु./लाख)	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	138	156	182
प्रति व्यक्ति औसत मजदूरी (रु. प्रति वर्ष)	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	120	134	153
प्रति व्यक्ति प्रति दिवस औसत मजदूरी (रुपए)	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	120	134	153

(घ) निवेश से आय तथा पूंजी जुटाने की क्षमता

57. नकद लाभ तथा निवेश से आय के रूप में घरेलू उद्योग के वित्तीय कार्य निष्पादन की जांच अत्यधिक गिरावट दर्शाती है। किए गए निवेश पर आय 33% से घटकर 5% रह गई है। यद्यपि घरेलू प्रचालनों में नियोजित पूंजी में वृद्धि हुई है, तथापि संबद्ध देशों से प्राप्त आयातों के दबाव के कारण आधार वर्ष की तुलना में लाभ तथा किए गए निवेश से प्राप्त आय उल्लेखनीय गिरावट दर्शाती है।

निवेश से आय	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
लाभ/हानि	*****	*****	*****	*****
जोड़ें: ब्याज	*****	*****	*****	*****
ब्याज पूर्व लाभ/हानि	*****	*****	*****	*****
लगाई गई पूंजी-एनएफए आधार पर	*****	*****	*****	*****
निवेश पर लौटाया	*****%	*****%	*****%	*****%
प्रवृत्ति	100	56	45	15
विस्तार हेतु पूंजी निवेश	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	88	-13	21

(ङ) निवेश तथा पूंजी जुटाने की क्षमता

58. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संभवतः उत्पाद की मांग में उल्लेखनीय वृद्धि के मद्देनजर घरेलू उद्योग ने जांच अवधि के दौरान विस्तार हेतु नए सिरे से पूंजी निवेश किया था। तथापि घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में निरंतर क्षरण के कारण नयी पूंजी जुटाने की इसकी क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

(च) पाटन की सीमा

59. प्राप्तित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति की सीमा के एक सूचक के रूप में यह पाया गया है कि संबद्ध देशों के संबंध में निर्धारित पाटन मार्जिन अत्यधिक है।

(घ) माल सूचियां

60. घरेलू उद्योग की मालसूची स्थिति से घरेलू उद्योग का उल्लेखनीय मालसूची धारण ज्ञात होता है, हालांकि निर्यात कार्यकलापों के कारण औसत रस्टॉक में उल्लेखनीय कमी आई है।

मालसूची	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
घरेलू उद्योग का औसत रस्टॉक (मी.टन)	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	95	73	57
बिक्री के दिवसों की संख्या के रूप में औसत रस्टॉक	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	87	66	51

(झ) वृद्धि

61. यद्यपि क्षमता, उत्पादन, बिक्री तथा उत्पादकता जैसे मानदंडों के रूप में घरेलू उद्योग की वृद्धि सकारात्मक थी, तथापि बाजार मूल्य, लाभ, नकद प्रवाह तथा निवेश से प्राप्त आय के रूप में यह नकारात्मक थी।

(ट) क्षति का समग्र आकलन

62. विभिन्न कारकों का उपर्युक्त विश्लेषण यह दर्शाता है कि क्षमता, उत्पादन की मात्रा तथा बिक्री में सुधार होने के बावजूद बाजार हिस्से, निवल बिक्री प्राप्ति, लांभप्रदता, निवेश से आय तथा नकद लाभ में गिरावट के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। संबद्ध देशों से हुए पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों में उल्लेखनीय कटौती हुई; परिणामतः ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई, जब बिक्री कीमत घट रही थी और उत्पादन लागत बढ़ रही थी। घरेलू उद्योग को हुई क्षति वास्तविक और उल्लेखनीय है।

(ठ) अन्य कारक तथा कारणात्मक संबंध

63. वास्तविक क्षति के अस्तित्व तथा कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत अधिक्रमण तथा मंदी के प्रभाव के रूप में घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों की मात्रा व कीमत के प्रभाव की जांच के उपरांत प्राधिकारी द्वारा यह भी जांच की गई कि क्या भारतीय नियमों एवं पाटनरोधी करार के तहत सूचीबद्ध

संकेतात्मक मानदंडों का भी घरेलू उद्योग को हुई क्षति में कोई योगदान रहा है। अतएव निम्नलिखित मानदंडों की जांच की गई :-

(क) अन्य देशों से आयात :- डीजीसीआईएंड एस के आंकड़े दर्शाते हैं कि संबद्ध वस्तुओं का आयात अन्य अनेक देशों से किया जा रहा है, जो जांच के अधीन नहीं है। तथापि ऐसे देशों से आयातों की मात्रा या तो नगण्य है अथवा यह संबद्ध देशों की आयात कीमत से अधिक कीमत पर है। अतः यह घरेलू बाजार की कीमतों को प्रभावित नहीं करती;

(ख) मांग में संकुचन: संबद्ध वस्तुओं की मांग में क्षति की संपूर्ण जांच अवधि के दौरान स्वस्थ वृद्धि देखी गई है, अतः मांग में संभावित संकुचन को घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं बताया जा सकता।

(ग) खपत का तरीका : खपत के पेटर्न में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन प्राधिकारी के ध्यान में नहीं आया है।

(घ) प्रतिस्पर्धा की शर्तें : वस्तुएं मुक्त रूप से निर्यात योग्य हैं। आवेदकगण संबद्ध वस्तुओं के प्रमुख उत्पादक हैं और घरेलू उत्पादन में उनका योगदान लगभग 100% है। अतः घरेलू प्रतिस्पर्धा को घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं माना जा सकता। प्रतियोगिता की शर्तों अथवा व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियों से संबंधित कोई अन्य साक्ष्य भी प्राधिकारी की जानकारी में नहीं लाया गया है।

(ङ) प्रौद्योगिकी का विकास : प्रौद्योगिकी में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हुआ है जिसके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो।

(च) घरेलू उद्योग का निर्यात कार्य-निष्पादन:

	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
निर्यात बिक्री	363	398	391	579
प्रवृत्ति	100	109	107	159

प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की निर्यात बिक्री उल्लेखनीय है और सकारात्मक वृद्धि दर्शाती है। तथापि, क्षति के विश्लेषण के प्रयोजनार्थ केवल घरेलू बिक्री पर ही विचार किया गया है और घरेलू उद्योग के निर्यात कार्य निष्पादन के कारण क्षति, यदि हुई हो, को पाटित आयातों से जोड़ा नहीं गया है।

(छ) उत्पादकता: कुल उत्पादन के रूप में घरेलू उद्योग की उत्पादकता में सुधार हुआ है। अतः इसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं माना जा सकता।

64. ऐसा कोई अन्य कारक निर्दिष्ट प्राधिकारी के ध्यान में नहीं लाया गया है, जिसने घरेलू उद्योग की स्थिति को प्रभावित किया हो।

छ 1 कारणात्मक संबंध को स्थापित करने वाले कारक

65. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन का विश्लेषण यह दर्शाता है कि संबद्ध देशों से पाठित आयातों के कारण घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में वास्तविक गिरावट आई है। अतः पाठित आयातों तथा घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध निम्नलिखित आधारों पर स्थापित किया जाता है।

- क. संबद्ध देशों से पाठित आयातों की कीमतों में उल्लेखनीय सुधार के बाद जांच अवधि के दौरान इनमें भारी गिरावट आई है, जिसकी परिणति अत्यधिक कीमत कटौती में हुई है। इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग उत्पादन लागत में उल्लेखनीय वृद्धि के बावजूद कीमतों में कमी करने गर विवश हो गया।
- ख. घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में कमी के कारण कंपनी के लाभ, नकद प्रवाह तथा निवेश से आय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।
- ग. यद्यपि घरेलू उद्योग ने आयात कीमतों में गिरावट का प्रत्युत्तर दिया, तथापि सकारात्मक कीमत कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री की परिणति संबद्ध देशों से आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि के रूप में हुई। इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई।
- घ. जब बिक्री की लागत बढ़ रही थी तब बिक्री कीमतों में सकारात्मक कीमत कटौती के कारण गिरावट आ रही थी। पाठित आयातों ने घरेलू उद्योग को कीमत में वैध वृद्धि करने से रोक दिया।

66. अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है और यह क्षति संबद्ध देशों से पाटित आयातों की मात्रा तथा कीमत प्रभाव के कारण हुई है।

ड क्षति की मात्रा तथा क्षति मार्जिन

67. प्राधिकारी द्वारा अलग-अलग उत्पाद प्रकारों के लिए क्षति रहित कीमत (एनआईपी) तथा समस्त उत्पाद के लिए भारित औसत क्षति रहित कीमत का निर्धारण किया गया। अलग-अलग क्षति मार्जिन तथा संबद्ध देशों से भारित औसत क्षति मार्जिन के निर्धारण के लिए अलग-अलग उत्पाद प्रकारों की क्षति रहित कीमत की तुलना संबद्ध देशों से अलग-अलग उत्पादों के पहुंच मूल्य से की गई है। तदनुसार परिकलित भारित औसत क्षति मार्जिन का ब्यौरा निम्नानुसार है :-

देश	उत्पाद	आयातों की मात्रा	क्षति रहित कीमत	पहुंच मूल्य	क्षति मार्जिन	भारित औसत क्षति मार्जिन	क्षति मार्जिन %
चीन जन.गण.	एपीएस	160000	*****	29.36	*****	*****	
	पीपीएस	29500	*****	36.12	*****	*****	
	एसपीएस	140000	*****	42.87	*****	*****	
	कुल	329500	*****		*****	*****	60-70%
जापान	एपीएस	450	*****	44.61	*****	*****	
	पीपीएस	-	*****				
	एसपीएस	72000	*****	59.97	*****	*****	
	कुल	72450	*****		*****	*****	65-75%

ढ. निष्कर्ष:

68. हितबद्ध पक्षों द्वारा उठाए गए मुद्दों, किए गए प्रस्तुतीकरण तथा प्राधिकारी को उपलब्ध कराए गए तथ्यों, जिन्हें इस जांच परिणाम में दर्ज किया गया है, की जांच के उपरांत प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि :-

- (i) संबद्ध वस्तुओं का संबद्ध देशों से भारतीय बाजार में प्रवेश निर्यातक देशों के घरेलू बाजारों में उनके सामान्य मूल्य से कम कीमतों पर हुआ है;
- (ii) संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तुओं की पाटन मार्जिन अत्यधिक तथा न्यूनतम से अधिक हैं;
- (iii) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है और यह क्षति संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के पाटित आयातों की मात्रा तथा कीमत प्रभाव दोनों के कारण हुई है ।

ण. भारतीय उद्योग के हित एवं अन्य मुद्दे :

69. प्राधिकारी नोट करते हैं कि सामान्य तौर पर पाटनरोधी शुल्कों का उद्देश्य पाटन की अनुचित व्यापार पद्धतियों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करके भारतीय बाजार में खुली तथा उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति को बहाल करना है, जो देश के भी सामान्य हित में है । पाटनरोधी उपाय लागू करने से संबद्ध देशों से आयात किसी भी प्रकार से प्रतिबंधित नहीं होंगे अतः उपभोक्ताओं के लिए इस उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी ।

त. सिफारिशें:

70. निर्धारित नियमावली की शर्तों के अनुसार पाटन, क्षति तथा पाटन एवं घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की जांच शुरू करने एवं इसे निष्पादित करने तथा संबद्ध देशों के विरुद्ध सकारात्मक पाटन मार्जिन के निर्धारण के साथ-साथ ऐसे पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति के निर्धारण के उपरांत प्राधिकारी का यह अभिमत है कि पाटन तथा घरेलू उद्योग को हुई क्षति के प्रभाव को दूर करने के लिए निश्चयात्मक शुल्क लगाना आवश्यक है । अतः प्राधिकारी नीचे वर्णित प्रकार तथा तरीके से संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाना आवश्यक समझते हैं और इसकी सिफारिश करते हैं ।

71. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कम से कम शुल्क के नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन की मार्जिन अथवा क्षति की मार्जिन के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क, जो भी कम हो, लगाने की संस्तुति करते हैं, ताकि घरेलू उद्योग

की क्षति को दूर किया जा सके। तदनुसार प्राधिकारी सिफारिश करते हैं कि चीन जन.गण. तथा जापान के मूल की अथवा वहाँ से निर्यातित एवं सीमाशुल्क टैरिफ वर्गीकरण अधिनियम, 1975 के अध्याय 28 के अंतर्गत आने वाली संबद्ध वस्तुओं के सभी आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाए जाएं और इनका संग्रहण अनंतिम शुल्क लगाए जाने की तारीख से किया जाए। पाटनरोधी शुल्क की राशि निम्नलिखित तालिका के कॉलम सं.9 में उल्लिखित राशि होगी।

72. उपर्युक्त के अध्यधीन दिनांक 23 फरवरी, 2007 की अधिसूचना द्वारा अधिसूचित अनंतिम जांच परिणामों की पुष्टि एतद्वारा की जाती है।

शुल्क तालिका

फ्र. सं.	टैरिफ वस्तु का उप-शीर्ष	वस्तुओं का विवरण	विनिर्देशन	उद्गम देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	शुल्क की राशि	माप की इकाई	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1 0	28334	पेरॉक्सोसल्फेट अथवा परसल्फेट	1. अमोनियम परसल्फेट्‌स 2. पोटेशियम परसल्फेट्‌स 3. सोडियम परसल्फेट्‌स	चीन जन.गण.	कोई भी	कोई भी	कोई भी	34.91	किग्रा	रुपए
2	-वही-	-वही-	-वही-	जापान को छोड़कर कोई भी	चीन जन.गण	कोई भी	कोई भी	34.91	किग्रा	रुपए
3	-वही-	-वही-	-वही-	जापान	कोई भी	कोई भी	कोई भी	38.52	किग्रा	रुपए
4	-वही-	-वही-	-वही-	चीन को छोड़कर कोई भी	जापान	कोई भी	कोई भी	38.52	किग्रा	रुपए

थ. आगे की प्रक्रियाएं

73. इन संस्तुतियों के कारण केन्द्रीय सरकार के इस आदेश के विरुद्ध कोई अपील उक्त अधिनियम के संबंधित प्रावधानों के अनुसरण में सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क एवं सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष दायर की जा सकेगी।

74. प्राधिकारी समय-समय पर यथा संस्तुत निश्चयात्मक उपायों को जारी रखने, उनमें संशोधन करने अथवा उन्हें समाप्त करने की समीक्षा इस अधिनियम के संबंधित प्रावधानों के अनुसार इस संबंध में समय-समय पर जारी सार्वजनिक सूचनाओं के अनुसार कर सकते हैं। ऐसे किसी समीक्षा के अनुरोध पर प्राधिकारी द्वारा तब तक विचार नहीं किया जाएगा, जब तक इसे किसी हितबद्ध पक्ष द्वारा इस प्रयोजनार्थ निर्धारित समयावधि के भीतर प्रस्तुत न किया जाए।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 20th July, 2007

FINAL FINDINGS

Sub. : Anti-Dumping Investigation involving import of Peroxosulphates (also known as Persulphates) from China PR and Japan.

F. No. 14/1/2006-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (hereinafter referred to as the Rules) thereof :

1. WHEREAS M/s Gujarat Persalts Pvt. Ltd. Ahmedabad, M/s Calibre Chemicals Pvt. Ltd. Mumbai, and M/s Yoyo Chemicals Ahmedabad, (herein after referred to as the applicants) have jointly filed an application before the Designated Authority (hereinafter referred to as this Authority), in accordance with the Act, and the Rules, alleging dumping of Peroxosulphates also known as Persulphates (herein after also referred to as subject goods), originating in or exported from the China PR, and Japan (herein after also referred to as subject countries) and requested for initiation of an investigations for levy of anti dumping duties on the subject goods.
2. AND WHEREAS, the Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicants on behalf of the domestic industry, issued a public notice dated 28th July 2006 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries, in accordance with the sub-Rule 5(5) of the Rules, to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to recommend the amount of antidumping duty, which, if levied would be adequate to remove the injury to the domestic industry.

A. Procedure

3. Procedure described below has been followed with regard to the investigation after notification of the preliminary findings by the Authority.

- (i) The Designated Authority sent copies of preliminary finding dated 23rd February 2007 to the embassies of the subject countries in India, known exporters from the subject countries, known importers and other interested parties, and the domestic industry, as per the information available with it. Parties to this investigation were requested to make their views known in writing within 40 days of the notification of the preliminary findings.
- (ii) The comments of the interested parties in response to the preliminary findings have been taken on record and the Authority has examined the issues raised therein in this disclosure statement.
- (iii) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.
- (iv) Optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India was worked out based on the information furnished by the petitioner on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) so as to ascertain whether Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry.
- (v) The Authority held a public hearing on 09.04.2007 to provide an opportunity to all interested parties to present their view. Oral submissions made by the parties during the public hearing reproduced in writing have been taken on record for the purpose of this investigation.
- (vi) Confidentiality claims of various interested parties in respect of the data submitted by them have been examined. The information, which is by nature confidential or which has been provided on a confidential basis by the interested parties, along with non-confidential summary thereof, has been treated confidential *** in this finding represents information furnished by the domestic industry on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.
- (vii) The essential facts of the case were disclosed to all interested parties in the form and confidential and general disclosures on 5th July 2007. Comments of the interested parties on the disclosure statement, to the extent they are relevant and supported by evidence, have been considered by the Authority
- (viii) Investigation was carried out for the period starting from 1.1.2005 to 31.12.2005 (POI).

- (ix) For the sake brevity the comments of interested parties and issues raised prior to the preliminary findings and addressed therein have not been repeated in this finding.

C. Product under Consideration and Like Article

4. The product under consideration in this investigation is Peroxosulphates (also known as Persulphates). Three types of Persulphates have been included in the present investigation, which are:

- I) Ammonium Persulphate (APS), (NH₄)₂S₂O₈
- II) Potassium Persulphate (PPS) (K₂S₂O₈); and
- III) Sodium Persulphate (SPS) (Na₂S₂O₈).

5. These Persulphates are a group of closely related compounds produced as Alkali Metal salts. These are the most sensitive and efficient oxidizing agents and releases active oxygen very efficiently and easily. All the three persulphates are manufactured electrochemically and have the same or substitutable end-uses as an initiator and oxidizing agent in the textile and chemical industries. All Persulphates are classified in Chapter 28 of the Customs Tariff Act, 1975 under subheading 2833 40 and under subheading 28334000 under the Indian Trade Classification (Based on Harmonized Commodity Description and Coding system). However, the above classification is indicative only and is no way binding on the scope of this investigation.

6. Based on the arguments of the domestic industry that the above types of persulphates should be included within the scope of the product under consideration as the manufacturing process, functions and uses of the persulphates are same and the products have considerable technical and commercial substitutability, the Authority, in its preliminary findings held that the three types of persulphates are required to be treated as alike and one product for the purpose of defining the 'product under consideration' in this case. No argument has been received from any interested party on the scope of product under consideration or like article. Therefore, the Authority confirms its preliminary findings in respect of the product under consideration and like article.

D. Domestic Industry and Standing

7. The application has been filed by M/s Gujarat Persalts Pvt. Ltd. Ahmedabad, M/s Calibre Chemicals Pvt. Ltd. Mumbai and M/s Yoyo Chemicals Ahmedabad, and the applicants collectively account for more than 50% of the domestic production of the subject goods in India. The domestic industry has pointed out certain errors in respect of the information on import of the subject goods by the applicants and the Authority notes that M/s Yoyo Chemicals has imported 20MT of Sodium Sulphate during the POI. Gujarat

Persalts Pvt. Ltd has imported 21 MT of Ammonium Persulphates and 21 MT of Sodium Persulphates during the POI. The imports of the applicant domestic industry constitutes about 10% of their own production and part of this imports has been used for further production, while a part of it has been sold in the domestic market. The applicants have argued that these imports were made when the industry was faced with cheap Chinese to investigate the reasons for so low priced imports. It has been further argued that even if these two producer are not considered as a part of the domestic industry, M/s Calibre Chemicals, having a production of about 1400 MT of the subject goods during POI, commands more than 50% of total production of the subject goods in India and therefore, commands the standing to file the application and would constitute domestic industry under the Rules.

8. The Authority notes that Rule 2(b) does not prohibit inclusion of the domestic producers, who had imported the subject goods, to be considered as a part of the domestic industry. In the instant case, two of the applicant domestic producers have imported subject goods, but the quantity imported is less than 10% of their total production of the subject goods during the period of investigation. Further, these imports were apparently made as a matter of self-defense against cheap imports, to ascertain possible reasons for exports at such low prices. In view of the fact that injury evaluation of the domestic industry should take into account as much data of the domestic producers as possible, the Authority is of the view that these two producers should be considered as a part of the domestic industry for injury determination. None of the interested parties have disputed either the claim of the domestic industry or provisional determination of the Authority in this regard. Therefore, the Authority holds that the applicants constitute the domestic industry and command the standing for filing the application for the purpose of this investigation, within the meaning of the Rules.

E. De Minimis Import Volumes

9. As per the import data received by the Authority from the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) and other secondary sources, the imports of the subject goods from the subject countries are above the de minimis level.

F. Other submissions and issues raised

10. The Authority notes that none of the producers of the subject goods in the subject country and consumers, or importers in India has responded to the Designated Authority, nor has any party provided any information relevant to the present investigations. The domestic industry, in its comments on the preliminary finding of the Authority, has commented upon the methodology of determination of injury margin and comparison methodology thereof. These comments have been noted by the Authority and addressed in the relevant sections in this finding.

G. Determination of Dumping Margin

11. The Authority notes that Rule 6.8 of the antidumping Rules provide that in a case where an interested party refuses access to, or otherwise does not provide necessary information within a reasonable period, or significantly impedes the investigation, the Authority may record its findings on the basis of the facts available to it.

12. Article 6.8 of the Agreement, read with paragraph 1 of Annex II, provides that as soon as possible after the initiation of the investigation, the investigating authorities should specify in detail the information required from any interested party, and the manner in which that information should be structured by the interested party in its response. The authorities should also ensure that the party is aware that if information is not supplied within a reasonable time, the authorities will be free to make determinations on the basis of the facts available, including those contained in the application for the initiation of the investigation by the domestic industry.

13. The Authority notes that the exporters and the governments of the subject countries have been adequately notified about the requirement of submission of information in the form and manner prescribed and adequate opportunity was also granted to the parties to make their submissions in this regard. Therefore, in the absence of cooperation from the subject country, the Authority has determined the dumping margins in respect of the subject country on the basis of facts available.

a) China PR

Normal Value

14. The Authority notes that none of the exporters/producers from China PR has provided any response or information on the normal value as per the prescribed questionnaire, or rebutted the non-market economy presumption against Chinese exporters. In the preliminary finding, the Authority had determined the normal value in China on the basis of Para-7 to Annexure-I to the Rules. After the preliminary findings also, none of the Chinese producers have responded to the Authority.

15. Petitioners had identified USA as an appropriate surrogate country and provided the consent of M/s FMC Chemical Corporation, USA, one of the producers of the product under consideration in USA, to act as the surrogate for determination of the normal value of the subject goods in terms of para 7 of Annexure I of the Rules. It was brought to the notice of the Authority that there are very few producers of the subject goods in the world and M/s FMC Corporation USA is one of the leading producers of the subject goods who has agreed to cooperate in this investigation. Accordingly, the Authority made a request to M/s FMC Chemical Corporation, USA, to provide relevant

information before notifying the surrogate country for the above purpose, in terms of the above Rules. M/s FMC Corporation has provided its cost and domestic selling information for determination of the normal value in terms of first proviso of para 7 of the Annexure 1 of the Rules. Accordingly, Authority notified the interested parties about the selection of the surrogate country in terms of the above Rules. However, no response has been received from any interested party on this issue.

16. The surrogate producer in the USA has provided relevant information. Certain discrepancies in the information submitted by the surrogate producers have been noticed. The Authority found a significant difference in the cost and prices of the surrogate producer and the constructed normal value claimed by the domestic industry in all three-product types. The discrepancies were pointed out to FMC after the preliminary findings and the surrogate producer has submitted further information and clarification. However, the information continued to show significantly higher prices for certain product types and indicates significant difference in cost and price structure compared to the country under investigation. The Authority finds that adoption of information submitted by FMC Corporation, for the purpose of normal value determination, would be more adverse to the Chinese producers. The domestic industry in its post preliminary finding submissions has argued that only because the domestic industry is a more efficient producer with considerably lower cost of production, the Authority should not reject the surrogate producer's data and construct the normal value on the basis of domestic industry's cost of production. The Authority notes that the data of the surrogate producer could not be fully relied upon because of the reasons stated above and therefore, it would not be appropriate to accept the same for determination of normal value in China irrespective of the fact whether it gives a higher or lower normal value.

17. In its petition, the domestic industry had claimed normal value in China based on cost of production of the subject goods in India with a reasonable addition for profit margin. The Authority concludes that determination of normal value on the basis of cost of production in India duly adjusted taking into account international price of raw materials and adjusted consumption Norms, with a reasonable profit margin of ***% is the most appropriate basis for determination of normal value in China PR. Accordingly, the ex-works normal value of the product under consideration for all exporters from China has been determined as follows:

Product Type	Constructed Normal Value US\$/Kg
Ammonium Persulphate	*****
Potassium Persulphate.	*****
Sodium Persulphate	*****

Export Price

18. The Authority had noted in the preliminary findings that none of the exporters from China has provided any information with regard to the price at which the subject goods have been exported to India. The provisional determination made by the Authority was also made known to all interested parties. However, none of the Chinese producers have responded to the Designated Authority even after the preliminary findings. Under the circumstances, it is not possible to determine export price separately for each exporter.

19. DGCIS was requested to provide detailed information with regard to imports of the subject goods in India, which has been received and analysed. Accordingly, export price has been determined on the basis of weighted average export price of all imports as per information provided by DGCIS. Separate export prices have been determined for three type of persulphates involved. The net ex-factory export prices have been determined after allowing for adjustments towards inland transportation, ocean freight and insurance from the CIF value reported by DGCIS, on facts available basis, in the absence of complete information from any cooperative exporter from that country. Accordingly, net-export prices at the ex-factory level have been determined as follows:

Product Type	Net Export Price US\$/Kg
Ammonium Persulphate	*****
Potassium Persulphate.	*****
Sodium Persulphate	*****

Dumping Margin

20. The ex-works normal values of individual types have been compared with the respective ex-works export prices for determination of the dumping margins at product type levels and thereafter weighted average dumping margins for the product under consideration have been determined as follows:

Product Type	Import Volume in Kg	Normal Value US\$/Kg	Export Price US\$/Kg	Dumping margin US\$/Kg	Weighted Average DM US\$/Kg	DM %
Ammonium Persulphate	160000	*****	*****	*****		
Potassium Persulphate	29500	*****	*****	*****		
Sodium Persulphate	140000	*****	*****	*****		
Total	329500				*****	131%

b) Japan

Normal Value

21. The Authority notes that none of the exporters/producers from Japan has provided any response or information on normal value as per the prescribed questionnaire. In the preliminary findings, the Authority had estimated the normal value based on facts available on the basis of estimates of cost of production, including selling, general & administrative expenses and reasonable profit. Preliminary findings were notified to all interested parties. However, there was no response from the Japanese producers after the preliminary findings also. Under the circumstances, the ex-works normal value of the subject goods for all exporters from Japan have been determined on the basis of estimates of cost of production in Japan, taking into account international price of raw material as per best available information, and adjusted consumption norms and manufacturing expenses and selling, general & administrative expenses as per facts available. A reasonable profit margin of ***% has been added to this cost to arrive at the normal value for Japan as follows:

Product Type	Constructed Normal Value US\$/Kg
Ammonium Persulphate	*****
Potassium Persulphate.	*****
Sodium Persulphate	*****

Export Price

22. In the absence of any cooperation from Japan, the Authority, in its preliminary findings, determined export price on the basis of weighted average import price of all transactions in respect of imports from Japan as reported by DGCIS. The export price so assessed, being the CIF export price, adjustments towards inland transportation, ocean freight and insurance were applied on the basis of facts available to arrive at ex-works export price. No comments have been received from any interested party on the above determination. Therefore, the Authority confirms its export price determination at ex-factory level as follows:

Product Type	Net Export Price US\$/Kg
Ammonium Persulphate	*****
Potassium Persulphate.	-
Sodium Persulphate	*****

Dumping Margin

23. The ex-works normal value has been compared with the normal value so determined at the same level of trade to determine the dumping margin, which works out as follows.

Product Type	Import Volume in Kg	Normal Value US\$/Kg	Export Price US\$/Kg	Dumping margin US\$/Kg	Weighted Average DM US\$/Kg	DM %
Ammonium Persulphate	*****	*****	*****	*****		
Potassium Persulphate	-	*****	*****	*****		
Sodium Persulphate	*****	*****	*****	*****		
Total		*****	*****	*****	*****	141%

Dumping Margin Summary

Product Type	Dumping margin amount (US\$/Kg)	Dumping margin %
China	*****	131%
Japan	*****	141%

24. The dumping margins so determined in respect of the subject countries are significant and above de minimis levels.

H. INJURY DETERMINATION

25. The Authority notes that no argument has been made by any interested party on the injury claims of the domestic industry or preliminary findings notified by the Designated Authority.

H.1 Cumulative assessment of injury

26. The Annexure II (iii) of the Anti Dumping Rules requires that where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti dumping investigations, the designated authority will cumulatively assess the effect of such imports, in case it determines that

- I) The imports from individual countries are above de minimis or cumulatively account for more than 7% of imports;
- II) The dumping margin against individual countries are above 2%; and
- III) Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles

27. The Authority notes that the dumped imports are entering the Indian market simultaneously from a number of countries, including the subject countries. Therefore, the issue of cumulative assessment of the injury caused to the domestic industry due to dumped imports from these sources has been examined with respect to the above parameters and it was observed that:

- i) The margins of dumping of individual products from each of the subject countries are more than the de minimis limit;
- ii) The volume of imports of individual products from each of the subject countries is more than the limits prescribed;
- iii) The domestic product and product supplied by producers in various countries are like articles;
- iv) Imported products and domestically produced subject goods are interchangeable and are being interchangeably used. Transaction wise information on imports from various countries shows that the imports are being made by traders also who have purchased the material for reselling. Goods supplied by the countries involved are entering the Indian markets through the same channels of distributions and directly competing in the same market;
- v) Products supplied from the subject countries are being marketed in India during the same period through comparable sales channels and under similar commercial conditions.

28. Therefore, the Authority holds that cumulative assessment of injury is appropriate in this case since the exports of individual products from the subject countries are directly competing amongst themselves, as well as with the like goods offered by the domestic industry in the Indian market.

H.2 Examination of Injury and Causal Link:

29. Rule 11 of Antidumping Rules read with Annexure-II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the domestic industry, "... taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles....". In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

30. The Authority notes that the application for imposition of antidumping duty has been filed by three domestic producers as recorded in paragraph 1 and these producers command about 94% of total production of the subject goods in India. The Authority also notes that there is another producer of the subject goods in India i.e., M/s Electrochem Industries which commands a very marginal share of the total production of the subject goods in India. For the purpose of injury determination and determination of non-injurious price

for the domestic industry as a whole, this producer was asked to provide its cost and injury information. However, this producer has failed to file any information. The Authority notes that since this producer commands a very small proportion of the total production of the subject goods, its data would not have any significant impact on the injury and non-injurious price determination. Therefore, the cost and injury information of the applicant domestic producers have been examined for injury determination.

31. For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales volume, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping, etc. have been considered in accordance with Annexure II of the Rules.

H.1.1 Volume Effects of Dumped Imports: Import volumes and impact on domestic industry

32. The effects of the volume of dumped imports from the subject countries, as well as dumped imports from other countries have been examined as follows.

a) Import Volumes and share of subject countries:

33. With regard to the volume of the dumped imports the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India.

34. Volume of imports of the subject goods from the subject countries have been analyzed based on the data reported in the DGCI&S data after pruning the data for unrelated products. The import figures are as under:-

Country	2002-03	2003-04	2004-05	POI	Quantity in Mt
China PR	120	213	204	330	
Trend	100	178	170	275	
Japan	0	55	36	72	
Trend	0	100	66	132	
Total subject countries	120	268	240	402	
Trend	100	223	200	335	
Other countries	79	53	105	91	
Trend	100	67	132	115	
Total Import	199	321	345	493	
Trend	100	161	173	248	
Share of imports from subject countries	60	83	70	82	

Data Source: DGCI&S

35. The above data indicates that total imports and dumped imports of the subject goods from the subject countries have increased substantially during the injury examination period by about 235%. The share of dumped imports from the subject countries, in the total imports, has increased from 60% in the base year to about 82% of the total imports during the POI.

b) Domestic production, capacities and capacity utilization:

36. The volume of domestic production and effects of dumped imports on the domestic operation of the domestic industry have been examined in terms of total production and capacity utilization.

Particulars	Quantity in MT			
	2002-03	2003-04	2004-05	Jan05-Dec05
Installed capacity	*****	*****	*****	*****
Trend	100	139	163	163
Output/Production	*****	*****	*****	*****
Trend	100	103	107	121
Capacity Utilization	78.23	57.79	51.60	58.26
Trend	100	74	66	74

37. The information shows that the domestic industry's capacity has increased by about 63% as compared to the base year. However, the production has increased by only 21% resulting in significant decline in capacity utilization to 58% showing a significant unutilized capacity.

c) Demand and Market Share:

38. The increase in volume of import has been analyzed with respect to the growth in demand and market shares.

a) Sales

39. Effects of the dumped imports on the domestic sales and market shares have been examined as follows:

	Quantity in Mt			
	2002-03	2003-04	2004-05	Jan05-Dec05
Domestic Sales of DI	*****	*****	*****	*****
Trend	100	110	110	112
Other Producers	*****	*****	*****	*****
Trend	100	119	110	110
Total Domestic sales	*****	*****	*****	*****
Trend	100	111	110	112

40. The above information shows that the sale of subject goods by the domestic industry has increased by about 12% compared to the base year. However, the authority also notes that the demand of the subject goods in the domestic market has increased by about 29% compared to the base year.

b) Demand and Market Share

Quantity in Mt

	2002-03	2003-04	2004-05	Jan05-Dec05
Domestic sales of DI	*****	*****	*****	*****
Sales by other Producers	*****	*****	*****	*****
Imports				
China	120	213	204	330
Japan	0	55	36	72
Others	79	53	105	91
Total Imports	199	321	345	493
Demand	*****	*****	*****	*****
Trend	100	117	118	129
Market shares				
Domestic Industry	79.5%	74.5%	74.0%	68.8%
Other producer	7.7%	7.8%	7.1%	6.5%
China	7.7%	11.7%	11.1%	16.5%
Japan	0.0%	3.0%	2.0%	3.6%
Dumped import	7.7%	14.7%	13.1%	20.1%
Other countries	5.1%	2.9%	5.7%	4.5%

41. The above data shows that while the demand has increased by about 29% the sales of domestic industry has increased by 12% only and their market share has declined from about 80% in the base year to about 69% during the POI. The market share of the dumped imports from the subject countries has increased from about 8% in 2002-03 to 20% during the period of investigation. Share of other countries in the total demand has declined marginally.

H.2.2 Price effect of the dumped imports on the Domestic Industry

42. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. The Authority finds that the weighted average CIF import prices of the subject goods from the subject countries have been as under:-

CIF Price	2002-03	2003-04	2004-05	CIF Rs/KG POI
China PR	26.98	27.00	33.95	30.52
Japan		39.19	38.55	38.21
Total Subject countries	26.98	29.50	34.64	31.91
Other Countries	48.17	42.34	66.86	44.31
Total	35.40	31.62	44.43	34.20

43. The above data indicates that the CIF import price of the subject goods from the subject countries have declined compared to the previous year after showing an upward trend in the previous years.

H.2.3 Price undercutting and underselling

44. The impact on the prices of the domestic industry on account of the dumped imports from the subject countries has been examined with reference to the price undercutting, underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of the analysis the cost of sales, net sales realization (NSR) and the non-injurious price (NIP) of the domestic industry have been determined by the Authority based on the verified data of the domestic industry. Net sales realization of the domestic industry has been determined considering selling price, excluding taxes & duties, rebates, discounts and freight & transportation. Landed price of imports has been determined considering CIF import price, with 1% landing charges and applicable basic customs duty. Weighted average Non-Injurious prices of individual product types of the subject goods manufactured by the domestic industry has been determined based on the cost of production of the domestic industry taking into account the judgment of the Hon'ble Supreme Court of India in Reliance matter.

45. The domestic industry, in its post preliminary comments has argued that the computation on landed value for the purpose of price undercutting and price underselling should be done after adding all local taxes and levies in addition to the basic customs duty and same should be compared with the domestic selling prices and NIP inclusive of all taxes and levies. However, the Authority notes that for the purpose of such determinations the comparison it is the consistent practice of the Authority to compare the ex-factory price of the domestic industry with the basic customs duty paid landed value of the imports at the port of discharge of the imports. Therefore, there is no merit in changing the methodology as suggested by the domestic industry. The price undercutting and underselling effect of individual types of persulphates have been determined for the POI as follows:

Period of investigation	APS	PPS	SPS Rs/Kg
Domestic selling price	*****	*****	*****
CIF price			
China PR	25.10	30.87	36.64
Japan	38.13		51.26
Total subject countries	25.17	30.87	37.15
Landed values			
China PR	29.36	36.12	42.87
Japan	44.61		59.97
Total subject countries	29.45	36.12	43.46
Price undercutting			
China PR	*****	*****	*****
Japan	*****	*****	*****
Total subject countries	*****	*****	*****
Price undercutting (%)			
China PR	35-45%	30-40%	45-55%
Japan	5-15%		25-35%
Total subject countries	35-45%	30-40%	40-55%
Non injury price	*****	*****	*****
Price underselling			
China PR	*****	*****	*****
Japan	*****	*****	*****
Total subject countries	*****	*****	*****
Price underselling (%)			
China PR	40-50%	30-40%	50-60%
Japan	10-20%		35-45%
Total subject countries	40-50%	30-40%	50-60%

46. The above information shows that the price undercutting and underselling at individual product type levels, as well as at the weighted average levels, are substantial during the POI.

H.2.4 Price suppression and depression

47. To examine the price suppression & depression effect of the dumped imports on the domestic prices the trend of net sale realization of the domestic industry has been compared with the cost of production.

	Rs/Kg			
All persulphates	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Weighted Average Domestic selling price	*****	*****	*****	*****
Trend	100	96	95	94

Weighted average Cost of Sale	*****	*****	*****	*****
Trend	100	106	108	113
Weighted average Landed values				
China PR	35.42	32.72	41.15	35.70
Japan	0	47.50	46.72	44.70
Total Subject Countries	35.42	35.75	41.98	37.33

48. The data shows that whereas cost of production increased during the injury investigation period by about 13%, the sales realization declined by about 6% when compared with the base year. The landed value of imports also declined significantly in the POI after upward trend till previous year. Therefore, the imports appear to have significant suppression effect on the domestic prices. The domestic industry appears to have been prevented from increasing its prices to recover the cost increase, in order to retain its market share.

H.3 Examination of other injury factors

49. After examining some of the injury factors i.e. actual and potential decline in sales and market share; actual and potential increase in volume of imports etc. in the previous section, the Authority has examined the other mandatory injury parameters as follows:

a) Actual and potential effect on productivity

50. The productivity of the domestic industry has been examined with reference to production per day and per employee as follows:

	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Total Production in Mt	*****	*****	*****	*****
Production per day in Mt	*****	*****	*****	*****
Trend	100	103	107	121
Productivity per employee in Mt	*****	*****	*****	*****
Trend	100	89	92	102

51. The daily productivity of the domestic industry has improved though per employee productivity remains more or less same as base year.

b) Actual and potential effects on profits

52. Based on the data of cost and prices of the subject goods of the domestic industry as a whole profitability of the industry has been worked out as follows:

Profitability	2002-03	2003-04	2004-05	POI	Rs./Kg
Weighted average NSR of DI	*****	*****	*****	*****	
Trend	100	96	95	94	
Weighted average cost of sales of DI	*****	*****	*****	*****	
Trend	100	106	108	113	
Profit/Loss per kg	*****	*****	*****	*****	
Trend	100	42	23	-14	

53. The above data shows that though there is an increase in overall production and sales, the cost of production has increased and the selling prices have declined. Thus, from positive profit margin per unit in the base year, the domestic industry reported net loss on the domestic sales in the POI.

b) Actual and potential effects on cash profit and cash flow

54. Cash flow and cash profits of the domestic industry over the injury period have been as under:-

	2002-03	2003-04	2004-05	POI	Rs in Lacs
Cash profit	*****	*****	*****	*****	
Trend	100	59	42	4	
Cash flow	*****	*****	*****	*****	
Trend	100	-10	6	-64	

55. The data of the domestic industry shows the cash flow and cash profits position of the domestic industry has significantly deteriorated over the injury period.

c) Employment and Wages

56. Number of employees and wages paid indicates that employment has increased because of the increase in production and capacity addition. The wages have also increased compared to the base year, which does not show any disproportionate increase in wage burden on the domestic industry.

	2002-03	2003-04	2004-05	POI
No. of employees of DI	*****	*****	*****	*****
Trend	100	115	116	119
Wages (Rs./Lacs)	*****	*****	*****	*****
Trend	100	138	156	182
Average wages per person (Rs. Per annum)	*****	*****	*****	*****

Trend	100	120	134	153
Average wages per person per day (Rs)	*****	*****	*****	*****
Trend	100	120	134	153

c) Return on investment and ability to raise capital

57. Examination of the financial performance of the domestic industry in term of cash profits and return on investment shows significant deterioration. From return of about 33%, the return on investments has declined to 5%. While capital employed in the domestic operation has increased, the profits and return on investments shows significant decline compare to the base year due to pressure of dumped imports from the subject countries.

Return on investment	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Profit/Loss	*****	*****	*****	*****
Add: Interest	*****	*****	*****	*****
Profit/Loss before interest	*****	*****	*****	*****
Capital employed-NFA basis	*****	*****	*****	*****
Return on investment	*****%	*****%	*****%	*****%
Trend	100	56	45	15
Capital Investment for expansion	*****	*****	*****	*****
Trend	100	88	-13	.21

d) Investment and Ability to raise capital Investment

58. The Authority notes that the domestic industry has made fresh capital investments for expansion during the investigation period apparently keeping in view significant growth in demand for the product. However, the financial performance of the domestic industry is significantly eroding, which has adverse impact on its ability to raise fresh investments.

e) Magnitude of Dumping

59. Magnitude of dumping, as an indicator of the extent to which the dumped imports can injure the domestic industry, shows that the dumping margins determined for the subject countries have been found to be significant.

d) Inventories

60. Inventory position of the domestic industry shows significant inventory holding by the domestic industry though the average stock has come down because of increase in export activity.

Inventory	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Average stock of DI (Mt)	*****	*****	*****	*****
Trend	100	95	73	57
Average Stock in terms of No. of Days' sales	*****	*****	*****	*****
Trend	100	87	66	51

i) Growth

61. Even though growth of the domestic industry in terms of parameters, such as capacity, production, sales, and productivity was positive, the same was negative in terms of market share, profits, cash flow, and return on investments.

K. Overall assessment of Injury

62. The above analysis of the factors indicate that in spite of the improvement in capacity, Production volume and sales, and productivity the domestic industry suffered injury on account of decline in market share, net sales realization, profitability, return on investments and cash profits. Dumped imports from the subject countries were significantly undercutting the prices of the domestic industry, resulting in a situation where selling price was declining, whereas cost of production was increasing. The injury suffered by the domestic industry is material and significant.

L. Other factors and Causal link

63. Having examined the existence of material injury and volume and price effects of dumped imports on the prices of the domestic industry, in terms of price undercutting, price underselling and price suppression, and depression effects, the Authority has also examined whether other indicative parameters listed under the Indian Rules and Agreement on Anti Dumping could have contributed to injury to the domestic industry. Therefore, the following parameters have been examined:

- a) **Imports from other Countries:** - DGCI&S data shows that the subject goods are being imported from several countries not under investigation. However, the volume of imports from such countries are either insignificant or at prices higher than the import prices from the subject countries and therefore, do not affect the prices in the domestic market;
- b) **Contraction in Demand:-** Demand for the subject goods shows a healthy growth during the entire injury investigation period and therefore, possible contraction in demand cannot be attributed to the injury to the domestic industry;

- c) **Pattern of consumption:-** No significant change in the pattern of consumption has been noticed by the Authority.
- d) **Conditions of competition:-** The goods are freely importable. The applicants are the major producers of the subject goods and account for almost 100% of the domestic production. Therefore, domestic competition could not have attributed to the injury to the domestic industry. No other evidence of conditions of competition or trade restrictive practices has been brought to the knowledge of the Authority.
- e) **Developments in technology:-** There is no significant changes in technology which could have caused injury to the domestic industry.
- f) **Export performance of the domestic industry:-**

	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Export Sale	363	398	391	579
Trend	100	109	107	159

The Authority notes that the export sale of the domestic industry is significant and shows positive growth. However, for the purpose of injury analysis the domestic sales only has been considered and injury, if any, caused due to the export performance of the domestic industry has not been attributed to the dumped imports.

- g) **Productivity:** - Productivity of the domestic industry has improved in terms of total output. Therefore, this cannot be attributed to the injury of the domestic industry.

64. No other factors that could have affected the conditions of the domestic industry has been brought to the notice of the Designated Authority.

I.1 Factors establishing causal link

65. Analysis of the performance of the domestic industry over the injury period shows that the performance of the domestic industry has materially deteriorated due to dumped imports from subject countries. Therefore, the causal links between dumped imports and the injury to the domestic industry is established on the following grounds:

- a. The dumped import prices from the subject countries have sharply declined during the POI after a significant increase, resulting in significant price undercutting. As a direct consequence, the domestic industry was forced to reduce the prices in spite of significant increase in cost of production.

- b. Reduction in the selling prices by the domestic industry adversely affected the profits, cash flow and return on investments of the company.
- c. Even though the domestic industry responded to decline in import prices, significant positive price undercutting and underselling has resulted in increase in market share of imports from the subject countries. As a direct consequence, market share of the domestic industry has declined.
- d. Even when the cost of sales was increasing, the selling prices were declining due to positive price undercutting. The dumped imports have prevented the domestic industry from effecting legitimate price increases.

66. Therefore, it may be concluded that the domestic industry suffered material injury and the injury has been caused by volume and price effects of the dumped imports from the subject countries.

M Magnitude of Injury and injury margin

67. The Authority has determined the non-injurious price (NIP) of individual product types as well as weighted average NIP for the product as a whole. NIP of individual product types have been compared with the landed value of the individual products from the subject countries to determine the individual injury margins and weighted average injury margin from the subject countries. Accordingly, weighted average injury margin works out as follows:

Country	Product	Qty of imports	NIP	Landed Value	Injury Margin	Weighted Average IM	IM %
China PR	APS	160000	*****	29.36	*****	*****	
	PPS	29500	*****	36.12	*****	*****	
	SPS	140000	*****	42.87	*****	*****	
	Total	329500	*****		*****	*****	60-70%
Japan	APS	450	*****	44.61	*****	*****	
	PPS	-	*****				
	SPS	72000	*****	59.97	*****	*****	
	Total	72450	*****		*****	*****	65-75%

N. Conclusions

68. After examining the issues raised and submissions made by the interested parties and facts made available before the Authority, as recorded in this finding, the Authority concludes that:

- i) The subject goods have entered the Indian market from the subject countries at prices less than their normal values in the domestic markets of the exporting countries;
- ii) The dumping margins of the subject goods imported from the subject countries are substantial and above de minimis;
- iii) The domestic industry has suffered material injury and the injury has been caused to the domestic industry, both by volume and price effect of dumped imports of the subject goods originating in or exported from the subject countries.

O. Indian industry's interest & other issues

69. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

P. Recommendations

70. Having initiated and conducted investigation into dumping, injury and causal links between dumping and injury to the domestic industry in terms of the Rules laid down and having established positive dumping margin against the subject countries, as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of definitive duty is required to offset dumping and injury to the domestic industry. Therefore, Authority considers it necessary and recommends imposition of definitive anti-dumping duty on imports of subject goods from the subject countries in the form and manner described hereunder.

71. Having regard to the lesser duty rule followed by the authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, the Authority recommends that definitive anti dumping duties be imposed on all imports of the subject goods falling under chapter 28 of Custom Tariff Classification Act 1975, originating in or exported from China PR and Japan, to be collected from the date of imposition of the provisional duty. The anti-dumping duty shall be the amount mentioned in Column No. 9 of the following table.

Duty Table

Sl. No	Sub Heading or Tariff Item	Description of Goods	Specificatio n	Country of origin	Countr y of Export	Prod ucer	Export er	Duty Amou nt	Unit of Meas ure	Curre ncy
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1	283340	Peroxosulphates or Persulphates	1. Ammonium Persulphate 2. Potassium Persulphate 3. Sodium Persulphate	China PR	Any	Any	Any	34.91	Kg	Rs
2	-Do-	-Do-	-Do-	Any excluding Japan	China PR	Any	Any	34.91	Kg	Rs
3	-Do-	-Do-	-Do-	Japan	Any	Any	Any	38.52	Kg	Rs
4	-Do-	-Do-	-Do-	Any Excluding China	Japan	Any	Any	38.52	Kg	Rs

72. Subject to the above the provisional findings, notified vide notification dated 23rd February 2007, are hereby confirmed

Q. Further Procedures

73. An appeal against the orders of the Central Government that may arise out of this recommendation shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

74. The Authority may review the need for continuation, modification or termination of the definitive measure as recommended herein from time to time as per the relevant provisions of the Act and public notices issued in this respect from time to time. No request for such a review shall be entertained by the Authority unless the same is filed by an interested party as per the time limit stipulated for this purpose.

R. GOPALAN, Designated Authority